Experiences of Divinity by childhood friend Vipin Jena :

In March 2007 Vipin Bhai got permission to publically share his experiences with all the brothers & sisters. He was advised to share four important events as experienced by him, which in this Kali Yuga :

- **No one has seen.**
- **No one has tasted.**
- **No one has heard.**
- **No one has experienced.**

Desh Bandhu Dass, a poojak and a bengali is the hindi interpretor

During childhood Vipin used to think that whatever their friend Keshavchandra was able to do or show is because he was studying and he himself was not studying. Only later did he realise that whatever he saw and experienced in presence of Thakur Ji was all his **Leelas & Darshan** of Divinity. Age wise Vipin is 4 years younger to Thakur Ji.

That which no one has seen :

- When Thakur ji turned 18 years old (year 1973) he turned into the Bal Krishna Roopa & remained in that state for 2 ½ hrs. All the friends saw this with their own eyes and picked him in their arms also.
- During the same period he turned into elder Krishna Roopa and remained in that state for seven days, that is when people from nearby villages also came to have his darshan.
- No one has seen all the 108 signs of divinity on Thakur ji's body, some have seen one, others two, but he has seen them all.

That which no one has tasted :

In younger days one day during their play, when his friends were thirsty, Thakur ji asked them to suckle his thumb and they tasted three types of flavours & their thirst was quenched. These 3 flavours were :-

- Tangy
- Sweet
- Mixed, which he could not describe

That which no one has heard :

- One night (Rakhi Purnima) around 2 AM (past midnight) a very terrible sound with vibrations was heard and all people were terrified. That is the time when the Pad Sign (Shree Wats Lanchan) appeared on Thakur ji's chest, which they all saw, since then he has kept his chest covered and never uncovered it.
    - Thakur Ji's sister Kamla insisted on seeing that sign, even though advised by his brother not to see it but finally she managed to see it by forcefully uncovering his chest, due to which she slowly lost her eyesight and turned blind.

That which no one has experienced :

- How he (Vipin) saw his (Thakur Ji's) **Ma Luxmi Roopa** & how Thakur Ji came back to his original form is another experience that he shared.

दिव्यत्व के अनुभव ; बाल सखा विपन जेना द्वारा

पहली बार विपन भाई को सभी गुरू भाई - बहनों को अपना अनुभव बताने की अनुमति मार्च 2007 में मिली। उनहे सलाह दी गई कि वह अपनी अनुभव की हुई चार मुख्य घटनायों का वर्णन करें जिनहें किसी ने इस कलियुग में :-

- **देखा न हो।**
- **चखा न हो।**
- **सुना न हो।**
- **अनुभव न किया हो।**

पूजक देश बन्धु दास, जो एक बंगाली हैं, उन्होंने हिन्दी में बताया।

विपन भाई उम्र में ठाकुर जी से 4 वर्ष छोटे हैं, उन्होने पढाई नहीं की थी, और ठाकुर जी पढ़ने स्कूल जाते थे। बचपन में वे सोचते थे, जो उनका सखा केशव चन्द्र कर पा रहें है या दिखा रहें हैं, इसलिए कर रहें हैं क्योंकि वे पढाई कर रहें हैं ! बाद में समय के साथ वह समझ पाए कि जो भी उन्होंने देखा, अनुभव किया वह सब दिव्यत्व की लीला एंव दर्शन था।

देखा न हो :

- जब ठाकुर जी 18 वर्ष के हुए तब वह 2 1/2 घन्टे के लिए कृष्ण के बाल गोपाल रुप में रुपान्तरित होकर रहे। इन दोस्तों ने अपने स्थूल चक्षु से देखा और उनहे गोद में भी लिया।
- उसी समय के दौरान सात दिन के लिए ठाकुर जी बडे कृष्ण के रुप में रुपान्तरित हो कर रहे, उस समय आस पास के गांव वालो ने भी वह दर्शन किए।
- किसी ने भी ठाकुर जी के शरीर पर दिव्यत्व के सारे 108 चिन्ह इकट्ठे नहीं देखें है, परन्तु इन्होने देखे हैं।

चखा न हो :

बचपन में खेलते समय एक दिन बच्चों को प्यास लगी तो ठाकुर जी ने उन्हें अपना अंगुठा चूसने को कहा ! इन्होंने तीन प्रकार के स्वाद अनुभव किए और इनकी प्यास भी बुझी।

- कशाई।
- मीठा।
- मिला जुला, जिसका वह वर्णन नहीं कर पाए।

सुना न हो :

- राखी पूर्णिमा वाले दिन रात्रि के 2 बजे कंपन के साथ बहुत भयंकर शब्द सृष्टि हुआ। सब लोग डर गए। उस समय ठाकुर जी की छाती पर पाद चिन्ह उभरा था, जो सब दोस्तो ने देखा, उसके बाद से अन्त तक ठाकुर जी अपनी छाती पूरी तरह से कपडे से ढक कर रखते थे।
    - ठाकुर जी की बहन 'कमला' ने बहुत जिद्ध करके ठाकुर जी के मना करने के बाबजूद, जबरदस्ती वह चिन्ह देखा, जिसके बाद उनकी आखों की रोशनी चली गई।

अनुभव न किया हो :

विपन भाई ने कैसे ठाकुर जी के **लक्ष्मी माता रुप** में दर्शन किए और वह कैसे वापिस अपने रुप में आए, यह अनुभव भी उन्होने बताया।